तर्ज––वफा जिनसे की बेवफा हो गये

आपसे इश्क रब्द में पिया

हाल ये अपना क्या हो गया

1–पिया अपने घर मे नही तन्हाई

मिलन ही मिलन था सुनी न जुदाई

वो इश्के निशां भी कहीं खो गया

2–मस्ती के घेरो मे हम तुम बंधे थे

इश्क के बोल ही सुने और कहे थे

फासला ये क्यूं दरम्यां हो गया

3–बातूनियो का सुख दिया है

मगर खुद को अब तक न जाहेर किया है

ये सोच के साथ हैरान हो गया

Nilamend App